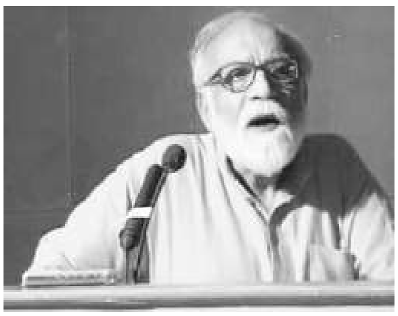
बुनियादी शिक्षा का परिवर्तनकारी नजरिया

उत्पादक काम, भाषा और ज्ञान का शिक्षाशास्त्र

✧ अनिल सद्गोपाल



गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में 28 फरवरी से 6 मार्च 2011 तक ''नई तालीम का परिवर्तनकारी नजरिया : उपनिवेशवाद से लेकर नवउदारवाद तक ज्ञान की लड़ाई'', विषय पर व्याख्यान माला आयोजित की गई थी। नई तालीम की इस सार्वजनिक व्याख्यानमाला में प्रो. अनिल सद्गोपाल ने सात व्याख्यान दिए। इन व्याख्यानों के विषय– मैकॉलेवाद बनाम फूले–गांधी–अंबेडकर का मुक्तिदायी शैक्षिक विमर्श, उत्पादक काम, भाषा और ज्ञान का शिक्षाशास्त्र, शिक्षा, विषमता और विविधता, शैक्षिक परिवर्तन–अनुभव विश्लेषण और सबक, शिक्षा पर नवउदारवादी हमला, शिक्षा नीति का राजनीतिक अर्थशास्त्र और शिक्षा के अधिकार के मायने, थे। ''मैकॉलेवाद बनाम फूले–गांधी– अंबेडकर का मुक्तिदायी शैक्षिक विमर्श'' को हम अंक 4 में प्रस्तुत कर चुके हैं। यहां प्रस्तुत है दूसरे दिन का व्याख्यान– उत्पादक काम, भाषा और ज्ञान का शिक्षाशास्त्र।

मैं अपने आज के व्याख्यान में उत्पादक काम, भाषा और ज्ञान के शिक्षाशास्त्र की बात करने वाला हूं। इसको मैं गिजु भाई की तकनीक से पेश करूंगा। पर ये दिवास्वप्न केवल स्वप्न नहीं हैं। इस दिवास्वप्न के पीछे काफी हकीकत है हमारे तजुर्बे की, जो होशंगाबाद जिले के एक छोटे से गांव में, जिसमें आधी जनता आदिवासी और दलित थी और बाकी आधी जनता अन्य जातियों की थी। जहां पर पंद्रह फीसदी मुसलमान भी थे। उस गांव में हम लोगों ने छः साल तक नई तालीम का प्रयोग किया।

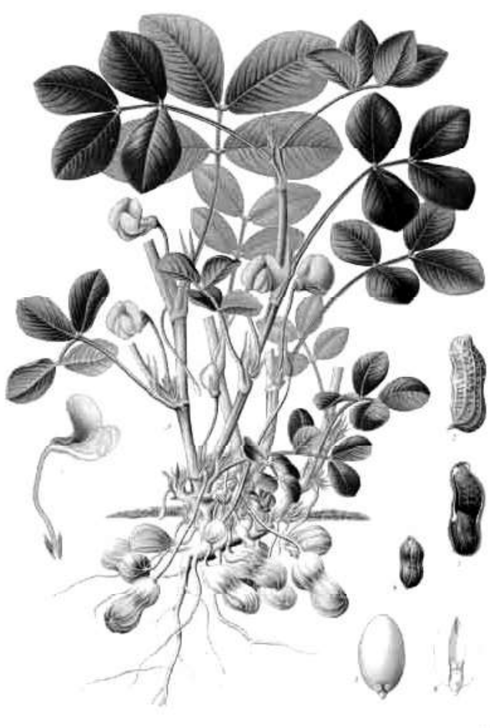
शुरुआत में तीन–चार गांवों से कोई बारह बच्चे इकट्ठे हुए। ये बात मैं आपको सुना रहा हूं सन् 1972 से लेकर 1977 तक की। वे सब लड़के थे। वे लोग ऐसे परिवार से आए थे जहां पर उनके मां–बाप या तो शुद्ध खेतीहर मजदूर थे या बहुत गरीब किसान थे जिनके पास आधा एकड़ जमीन या एक–दो एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं थी और सिंचाई भी नहीं थी। उनके घर में उत्पादन भी बहुत कम था, पैसा कम था और उन्होंने सरकारी स्कूलों में चौथी, पांचवी, छठी तक पढ़ा और छोड़ दिया। इन बच्चों के साथ हमने काम शुरू किया। काम ये था कि हमारे पास खेती थी, जहां पर हम लोग रहते थे। उस खेती में ये बच्चे हमारे साथ मिलकर खेती करेंगे। हम सब मिलकर इकट्ठे खेती करेंगे। समूह बनेगा और उस समूह के बतौर सब खेती करेंगे। वहां पर गाय भी पाली जाती थी तो गाय को पालने का पूरा काम भी

मिलकर करेंगे। बाद में गांव के एक बढ़ई को बुलाया और उससे बात की, इन बच्चों को अपना काम सिखा दीजिए। वे अपने पूरे औजार वगैरह सब कुछ लेकर आते थे। लगातार बहुत लंबे समय तक आते रहे और बच्चों को उन्होंने सुथारी (बढ़ईगिरी) का काम सिखाया। साथ में चूंकि खेती के लिए बिजली से चलने वाला एक पंप सेट लगा था तो उसकी मरम्मत करना, पंप सेट को चलाना, हैंडल करना, मेंटेन करना आदि काम भी बच्चे करते थे। बस सिद्धांत यह था कि सारा काम हम खुद करेंगे। उसमें से जो उत्पादन होगा उसे बाजार तक ले जाएंगे, बेचेंगे और इसका हिसाब रखेंगे। पूरा हिसाब रखेंगे कि कितना समय उसमें लगा रहे हैं, कितना खर्च कर रहे हैं, जो चीज उसमें खर्च हो रही है उसका भी हिसाब लगाएंगे, चाहे वो खाद हो, पानी हो या बिजली। सबकी कॉस्टिंग करेंगे। उसकी बाकायदा किताब बना कर रखी जाएगी और उसकी रोज डायरी लिखेंगे। इसके अलावा कोई पाठ्यपुस्तक नहीं थी। यह पाठ्यपुस्तक विहीन कार्यक्रम था। बहुत लोगों ने कहा कि बिना पाठ्यपुस्तक कैसे चलेगा। हमने कहा कि पाठ्यपुस्तक लिखी जाएगी। काम करते–करते बच्चे खुद लिखेंगे पाठ्यपुस्तक।

जब शुरुआत हुई तो हमने कहा कि देखिए यहां छः–सात एकड़ जमीन है, इसमें से आप एक एकड़ जमीन लीजिए। उस एक एकड़ में खेती करेंगे और ये मूंगफली उगाने का मौसम है तो उसमें मूंगफली की खेती करेंगे। पहले एक एकड़ नाप लीजिए। तो बच्चों ने कहा कि एक एकड़ ठीक है। अंदाज तो था ही, गांव के बच्चे थे। कहा कि यहां से लेकर यहां तक एक एकड़ हो जाएगा। दूसरे ने कहा कि नहीं–नहीं इतना छोटा थोड़े ही होता है, ज्यादा बड़ा होगा। तो बच्चों में बहस शुरू हुई कि एक एकड़ में कितना होता है। इसका फैसला कैसे होगा। तो कोई तरीका निकालें नापने का। एक एकड़ का नाप कितना है, कितने गज इधर चलें और कितने गज उधर चलें तो शायद एकड़ हो जाएगा। तो पहले ये पता करें कि एक एकड़ में कितने वर्ग गज होते हैं। ये वर्ग गज क्या होता है। पढ़ाई शुरू हो गई। तुम्हारे पास जो छोटा सा पुस्तकालय है उसमें से ढूंढो। वर्ग गज की जानकारी कहां से मिलेगी, यह निकाल कर देखो। रेखा गणित का अध्ययन चालू हो गया।

वर्ग क्या होता है, वर्ग बनाया गया, आयत बनाया गया। फिर हुआ यह कि केवल आयत या वर्ग से ही वर्ग गज नहीं होता बल्कि वर्ग गज तो एक अनियमित सतह और शक्ल में भी हो सकता है। अनियमित शक्ल का वर्ग गज, वर्ग बना हुआ वर्ग गज, आयत बना हुआ वर्ग गज, इन सबका अलग–अलग शक्लों में वर्ग गज, कागज के ऊपर रेखा गणित के बतौर सीखा गया। जब समझ बन गई आधा दिन लगा कर, अब उसे जमीन पर नापना है, कैसे नापें। फिर कहा कि स्केल से नापना तो बड़ा मुश्किल होगा। इतनी बड़ी जमीन को नापना है तो फिर कैसे नापा जाएगा। प्रश्न बच्चों के सामने मुश्किल था। सोचते रहे। एकाध दिन के बाद कहा कि हम एक नए ढंग से स्केल बनाएंगे, जमीन नापने के लिए। तो उन्होंने बांस की एक खपच्ची ली और उसे एक लम्बे बांस के एक सिरे पर बांध दिया। बांस के दूसरे सिरे को जमीन पर कील ठोक कर तिरछा बांध दिया। बांस के दोनों सिरों के बीच एक गज या एक मीटर की लंबाई फिक्स कर दी। शायद मीटर में की थी, मुझे अब याद आ रहा है कि वर्ग मीटर की भी बात हो गई थी। इस कोने से उस कोने तक एक मीटर की लंबाई तय कर दी। उन्होंने एक तिकोनी मशीन बना ली जिसमें नापने के लिए एक मीटर का अंतर होगा। ज्योमेट्री में जिस तरह का कंपास होता है, वैसा एक तरह का बड़ा कंपास बनाया। रेखा गणित के बॉक्स में कंपास होता है उसे बच्चों

ने देखा हुआ था, उसी से उनको यह विचार आया था। उसको वहां की भाषा में परकाल बोलते थे। उस परकाल को लेकर आगे की तरफ चलते जाते थे और हर कदम के साथ वे एक मीटर चल लेते थे। फिर उन्होंने जमीन नापनी शुरू की। इतने मीटर इधर चलेंगे, इतने मीटर उधर चलेंगे, फिर ऐसे चलेंगे। अंत में उन्होंने जमीन नाप ली, एक आयत के रूप में। मुझे याद है कि जब उन्होंने जमीन नाप ली तो उन्हें इतनी खुशी हुई थी जिसका हमें अंदाजा भी नहीं था। जैसे कोई उत्सव मनाते हैं वैसा माहौल बन गया था। हमने आज जमीन नाप ली और कहने लगे कि पटवारी को पकड़ेंगे। चूंकि डायरी लिखने का कार्यक्रम भी था। इसलिए इतना कर लिया है तो डायरी भी लिखनी थी। अब उनमें से कोई बच्चा चौथी तक पढ़ा, कोई पांचवी तक पढ़ा तो कोई छठी में छोड़ चुका। उन्हें हिंदी में लिखने में बहुत दिक्कत थी। वैसे भी उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है। उनकी मातृभाषा बुंदेलखंडी है। सवाल हुआ कि किस भाषा में लिखेंगे। देवनागरी लिपि तो आती है पर किस भाषा में लिखेंगे। हमने पूछा कि बताइए किसमें लिखेंगे तो एक ने कहा कि हिंदी में लिखेंगे। तभी दूसरा बोला कि हिंदी में बहुत मुश्किल होता है लिखना, क्योंकि उतनी हिंदी तो नहीं आती है।



अंत में बच्चों ने मिल कर ये फैसला किया कि हम बुंदेलखंडी में लिखेंगे क्योंकि जो आता है वही तो लिखेंगे और वही लिखेंगे जो किया है। हमने कहा, लिखो बुंदेलखंडी में। उनकी डायरी देवनागरी लिपि में और बुंदेलखंडी भाषा में लिखी जाने लगी। यह भी तय कर लिया कि हम लोग उनकी डायरी रोज समूह में बैठ कर पढ़ेंगे। उस पर चर्चा भी होगी कि क्या सीखा, क्या नहीं सीखा, क्या दिक्कतें आईं, लेकिन उसमें भाषा की गलतियां नहीं ढूढेंगे। दिखेंगी तो भी नहीं ढूंढेंगे, फैसला कर लिया। क्योंकि यदि भाषा की गलतियां ढूंढनी शुरू की तो बच्चों में सहज भाव से लिखने की जो हिम्मत पैदा हुई है, वह कुंठित हो जाएगी, दब जाएगी। जैसा लिख रहे हैं, चलने दो। धीमे–धीमे बात जब आगे बढ़ेगी तो गलतियां ठीक होती जाएंगी। न तो उनकी व्याकरण ठीक करेंगे, न ही शब्दों के क्रम को बदलेंगे। अगर मात्राएं गलत लगी हैं तो भी चलने देंगे। बात समझ में आ रही है या नहीं आ रही है इस पर जोर रहेगा। अलग–अलग डायरियां लिखीं।

बात आगे बढ़ी। मूंगफली कितनी बोनी (बुआई) है। हमने कहा कि हमको नहीं मालूम कि कितनी बोनी है, क्योंकि हमने तो कभी मूंगफली नहीं बोई। तो फिर क्या करना होगा। तो कहा कि चलते हैं गांव मे जाकर किसानों से पूछते हैं कि एक एकड़ में कितनी मूंगफली बोई जाती है। पूछा तो पता लगा। जो स्थानीय माप था उसको पाई बोलते थे,

एक बर्तन जिसका आयतन एक बाट के बराबर माना जाता है। ये लगभग एक किलो गेहूं के बराबर होता है। उस पाई के बर्तन में जितनी मूंगफली है उससे कितने खेत की बोआई की जा सकती है। खुद ही पता कर आए, यानि कि किसानों से जाकर बातचीत करना भी सीखा। फिर उन्होंने मूंगफली बो दी।

मूंगफली बोने से पहले मिट्टी की तैयारी कैसे करनी है, वह भी समझ लिया था। उन्हें पहले से भी कुछ आता था क्योंकि गांव में वे देखते रहते थे। उन्होंने हल लगा कर बाकायदा जमीन तैयार की और मूंगफली बोई। फिर मूंगफली में खाद डालने का सवाल आया। बोने से पहले भी और बोने के बाद भी। क्या डालना है, तो पता चला कि यहां पर यूरिया डाला जाता है। यूरिया क्यों डाला जाता है। ये सवाल हम पूछ सकते थे उनसे और पूछा भी। कहने लगे कि यह तो नहीं मालूम। सब डालते हैं। यूरिया डालने से क्या फायदा होगा। कहा कि नहीं मालूम। यूरिया में क्या होता है। यह भी नहीं मालूम। पता करो। पूछा, कहां पता करें। किसानों से पूछने गए। किसानों ने कहा कि हमें नहीं मालूम। हमें बताया गया कि यूरिया डालना है इसलिए हम डालते हैं। कहां पता चलेगा? उन्होंने कहा कि ब्लॉक ऑफिस में सरकारी कृषि विस्तार अधिकारी है, उससे पूछने जाएं। जब वे उससे पूछने गए, तो चपरासी ने कहा कि तुम अंदर नहीं जा सकते, तुम कौन हो। उन्होंने कहा कि हम विद्यार्थी हैं। इस पर चपरासी ने कहा कि अगर विद्यार्थी हो तो यहां क्यों आए हो, स्कूल में जाओ। उन्होंने कहा कि हम तो एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर से मिल कर ही जाएंगे। हमें उनसे कुछ पूछना है। इस पर चपरासी ने कहा, बाहर निकलो, यहां उनके पास टाईम नहीं है। बच्चे वापस रोते हुए लौट आए। छः किलोमीटर गए और छः किलोमीटर वापस लौट आए। कहा, चपरासी ने हमें मिलने ही नहीं दिया। हमने कहा, लेकिन तुमको पूछना ही है। फिर ये फैसला किया कि अब हम दोबारा जाएंगे और चपरासी से बिना पूछे अंदर घुस जाएंगे।

ये शिक्षा हो रही है हमारे हिसाब से। ये हमने नहीं कहा कि ऐसा करना है। उन्होंने खुद ही तय किया कि ऐसा करेंगे। अगले दिन वे फिर गए और बिना चपरासी से पूछे दस विद्यार्थी सीधे अंदर घुस गए। एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर के सामने खड़े हो कर उन्होंने कहा कि साहेब हमारी बात का जवाब दीजिए, हम कुछ पूछने आए हैं। उन्होंने अपना सवाल उनके सामने पेश किया। एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर ने कहा कि तुम्हें यूरिया डालने से मतलब है या ये पूछने से कि यूरिया में क्या होता है। बच्चों ने कहा कि हम ये तब डालेंगे जब हमें ये पता चले कि इसमें क्या है। एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर ने कहा कि देखो हमारे पास टाईम नहीं है, ये छपी हुई पुस्तिका है सरकार की, इसको ले जाओ और जो करना है करो। छपी हुई गाइडलाईन थी, उसको ले आए। बैठकर पढ़ा। हिंदी में थी। उसमें लिखा था कि यूरिया में नाईट्रोजन होता है। ये नाईट्रोजन क्या होता है। रसायन शास्त्र की दसवीं की किताब खोलो। अब सरकारी टेक्स्ट बुक खोली गई। ये बच्चे तो दसवीं में नहीं थे। लेकिन सरकारी टेक्स्ट बुक रसायन की जिसमें समझाया हुआ था कि नाईट्रोजन क्या है। रसायन का सबक चालू हो गया। सिद्धांत क्या है, इस शिक्षाशास्त्र का। बच्चे जब–जब उत्पादक काम में जिस मुकाम पर पहुंचेंगे उस मुकाम पर जो प्रश्न उठेगा, जो स्वाभाविक हो, उत्पादन से जुड़ा हुआ होगा उस पर वे पढ़ाई भी करेंगे, पुस्तकें भी पढ़ेंगे, सिर्फ पाठ्यपुस्तक बतौर नहीं बल्कि जहां पर ज्ञान है उसे पढ़ेंगे। इस तरह रसायन की बात शुरू हो गई। फिर बैठ कर नाईट्रोजन क्या है, पोटैशियम क्या है, सल्फर क्या है? तत्वों को खोला

गया और देखा गया। कहा कि अरे, इतने सारे रसायन होते हैं, सौ से भी अधिक, ये तो हमें मालूम ही नहीं था। चलो इनको देखते हैं। वहां यूरिया डाल दिया और इसके साथ ही यहां पर पढ़ाई चालू हो गई कि अलग–अलग तत्व क्या होते हैं और उनमें क्या फर्क है। जितना उस समय जरूरी था उतना ही देखा। ये नहीं कि इलेक्ट्रॉन के बाहर के चक्र में कितने इलेक्ट्रॉन हैं। अभी वो मौका नहीं आया, वह बाद में आएगा।

अभी तो रसायन शास्त्र की वर्गीकरण तालिका से केवल दोस्ती हो रही है। कह दिया कि जिसकी और पढ़ने की इच्छा होगी वह पढ़ लेगा। किताब तुम्हारे पास है ही, तुम्हारे कमरे में। उनका एक कमरा था जिसमें सारी जरूरत की चीजें थीं। औजार भी थे और किताबें भी थीं। फावड़ा, कुदाली और पुस्तकालय भी था, उनकी कॉपी और किताबें थीं। डायरियां थीं, सब कुछ था। जब मूंगफली बड़ी हुई तो उसके नीचे से एक फूल जैसा निकला। उसमें फूल दिखता नहीं था लेकिन वैसा ही कुछ था। बाहर निकलकर उसकी शाखा मुड़ी और वापस मिट्टी में चली गई। ये गांव में रहते थे इसलिए जानते थे। देखते थे गांव में। जब वह बड़ा होने लगा तो एक बच्चे ने पूछ लिया कि ये क्या है। हमें ये मालूम था लेकिन हमने कहा कि नहीं मालूम, तुम पता करो। कैसे पता चलेगा। वनस्पति शास्त्र की किताबें खोलो। किताबें खोली दसवीं, ग्यारहवीं की किताबों में ये तो मिला कि फूल होता है लेकिन इसका उत्तर नहीं मिला कि मूंगफली में ये क्या चीज है? अब क्या करेंगे? कहा कि किसी बड़े पुस्तकालय में जाना पड़ेगा जहां ज्यादा लिखा हुआ है। दो–तीन बच्चे दूर शहर में जहां बड़ा पुस्तकालय था, वहां गए। वहां भी नहीं मिला, अब क्या करें। उन दिनों इंटरनेट तो था नहीं। हमने कहा कि अब हम तुम्हें बताते हैं, तुमने बहुत खोज लिया।

पहले ये देखिए कि फूल क्या है, यह किताबों में लिखा था। फूल में बाहर अंखुड़ी है फिर पंखुड़ी है, फिर पुंकेसर है, पुरुष वाला हिस्सा, फिर उसमें स्त्री–केसर है। फूल की चीर–फाड़ की गई और बॉटनी का सबक चालू हो गया। जब फूल समझ गए तो कहा कि अब देखो वह क्या निकल रहा है मूंगफली में से। उसको खोला और देखा कि अरे इसमें तो वही है जो किसी फूल में होता है। ये तो फूल है। तो ये मिट्टी डाल देते हैं। क्यों डालते हैं। फूल से क्या होता है। कहा कि इससे बीज बनता है। बीज बनेगा, मूंगफली बनेगी, उसके लिए मिट्टी डाली जाती है ताकि अच्छे से बीज बन जाए। बॉटनी भी हो गई और खेती का भी सबक चालू हो गया। करते–करते मूंगफली बन गई और मूंगफली की फसल काटी गई, सुखाई गई और मूंगफली को बेचने का समय आया। अब बहुत ही विकट सवाल आ गया कि मूंगफली को बेचेंगे तो जितना हमने खर्च किया है (जिसका हिसाब रखा है) उतना पैसा वापिस होगा या नहीं होगा। एक एकड़ में मूंगफली उगाने में इतना खर्च हुआ, सब कुछ है। उन्होंने जो



समय लगाया, कभी एक घंटा लगाया कभी दो घंटे। अगर रात को सिंचाई करनी पड़ी तो रात को सारी टीम बैठी रही। एक–दूसरे की मदद के लिए क्योंकि रात को अकेले काम करने में डर लगता था। अमावस्या की रात को सभी विद्यार्थी इकट्ठे सिंचाई कर रहे हैं जिससे कि एक–दूसरे को सहारा दे सकें। अपनी हिम्मत बढ़ाने के लिए जोर–जोर से गाना गा रहे हैं। जितना समय लगा वह सब लिखा हुआ है, समय की कीमत भी लिखी हुई है, न्यूनतम मजदूरी इतनी हो गई। इतना खर्च तो कर दिया अब करना क्या है। बेचेंगे तो पैसा वापस आएगा या नहीं आएगा। इतनी अक्ल तो उनमें खुद थी कि तब बेचेंगे जब अच्छा दाम आएगा।

कैसे मालूम करोगे कि अच्छा दाम कब मिलेगा। जाकर पूछते हैं बाजार में। बाजार हफ्ते में एक दिन शुक्रवार को लगता है। शुक्रवार को बाजार गए, पूछा और पूछ कर आ गए। आकर रात को हिसाब लगाया कि इतने में क्या पैसा मिलेगा। पता चला कि नहीं मिलेगा तो सबके चेहरे उतर गए। ये तो घाटा हो जाएगा। घाटा हो जाएगा तो क्या करना होगा हमें। कहा कि इंतजार करेंगे, दाम जब बढ़ेंगे तब बेचेंगे। कब तुम्हें मालूम चलेगा कि दाम ठीक हो जाएगा, कब बढ़ेगा, कब कम होगा। उन्होंने कहा कि हम हर शुक्रवार जाएंगे दो–चार दुकानों पर जहां गांव के लोग बैठकर मूंगफली बेच रहे हैं। उनसे पूछेंगे कि आज किस भाव में मूंगफली खरीदोगे और बेचोगे। ये सब डायरी में नोट कर लेंगे और इसका हिसाब हर शुक्रवार को रखते जाएंगे। हमने कहा कि ये तो कर लोगे लेकिन आपको कैसे पता चलेगा कि कब दाम बढ़ने वाला है और अब घटने वाला है। कहा कि ये तो नहीं मालूम। उन्हें ग्राफ बनाना सिखाया गया। ग्राफ का एक्स अक्ष और वाय अक्ष क्या होता है। ग्राफ क्या होता है, कैसे बनता है। कैसे हर शुक्रवार का आंकड़ा एक ग्राफ के रूप में रखा जा सकता है। ग्राफ में बढ़ते हुए दाम का स्लोप अगर कम हो रहा है तो दाम और ज्यादा तेजी से नहीं बढ़ने वाले। अब तो समय है जब हम बेच दें, नहीं तो घाटे में चले जाएंगे। ग्राफ देखकर ये सब कैसे तय होता है, ये सब किया बच्चों ने। ग्राफ बनाने का काम जो बच्चे ग्यारहवीं–बारहवीं में नहीं सीख पाते हैं, मध्यप्रदेश के सरकारी स्कूलों में, वह इन बच्चों ने बिना ग्यारहवीं किए हुए खेती के साथ ग्राफ बनाना और त्रिभुज बनाकर उसका स्लोप नापना भी सीख लिया। रेखागणित, गणित, रसायन शास्त्र ये सब चल रहा था लेकिन अभी सामाजिक विज्ञान नहीं आया था। अब उसके आने का समय आ गया।

एक दिन एक बच्चे ने शाम की बैठक में पूछ लिया कि, ये बताइए कि ये दाम क्यों इतना बढ़ जाता है और इतना घट जाता है। एक बार जब दाम तय हो जाता है तो वह वैसा ही क्यों नहीं रहता हैं? बातचीत शुरू हुई। अचानक बाजार में ढेर सारी मूंगफली आ जाए तो दाम बढ़ेगा या घटेगा। जब बहुत सारी आ जाएगी तो लोग क्यों खरीदेंगे उसी दाम पर। क्योंकि अब तो इतनी सारी है तो सस्ती बिकेगी। आवक और जावक, मांग और पूर्ति के क्या रिश्ते होंगे, इस पर बातचीत हुई। वहां से यह बात निकली कि मांग और पूर्ति का क्या सिद्धांत होगा। फिर कहा कि अचानक ये इतनी सारी मूंगफली कहां से आती है। पता करो कि मूंगफली कहां–कहां उगाई जाती है हिन्दुस्तान में। फिर भूगोल की किताब खोली गई, नक्शा खोला गया। तो पता चला कि गुजरात में बहुत मूंगफली उगती है। गुजरात कहां है, तो नक्शे में देखा, ये है गुजरात। हमारे गांव से गुजरात कितना दूर है तो कहा कि मालूम नहीं। हमारा ये छोटा सा गांव होशंगाबाद जिले के एक सुदूर ब्लॉक में है। यहां से गुजरात की दूरी कितनी होगी पहले सीधी लाईन में नापो। बाद में ट्रेन का रास्ता भी नाप

Click to buy NOW! PDF-XChange Viewer www.docu-track.com

लेंगे। ये कैसे मालूम होगा, यहां एक इंच की दूरी है तो हमें कैसे मालूम चलेगा कि बड़ौदा कितनी दूर है। तब कहा कि ऊपर क्या है नक्शे में देखो। बच्चों ने कहा कि अरे ये तो देखा ही नहीं हमने, ये तो पैमाना लिखा हुआ है, स्केल है।

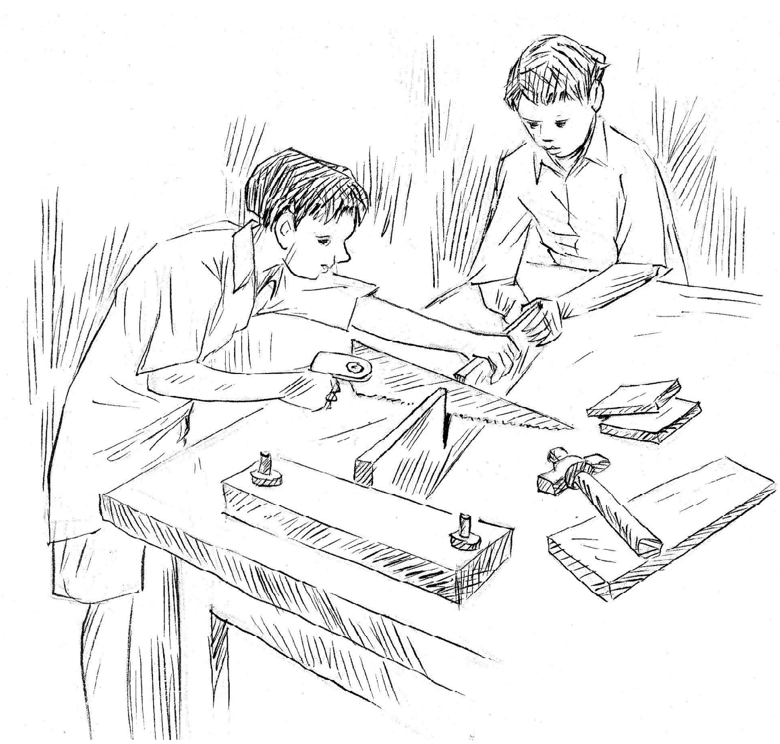
भूगोल पढ़ने वाले काफी वरिष्ठ विद्यार्थी भी नहीं जानते कि स्केल का उपयोग कैसे करना है। बच्चों ने नक्शे में स्केल देखा और कहा कि इसे कैसे देखेंगे। उन्होंने खुद ही ढूंढ़ लिया कि अगर स्केल इतना लंबा है तो इतनी दूरी में इतना किलोमीटर हो जाएगा। वहां लिखा है कि सौ किलोमीटर। उन्होंने तुरंत स्केल निकाला, अब तो स्केल का उपयोग करना सीख गए थे और धागे से भी नापना सीख गए थे, टेड़ा–मेड़ा नापना भी सीख गए थे। उन्होंने नापा और कहा कि बड़ौदा तो इतने किलोमीटर है। अरे ये तो हमारे गांव से बहुत दूर है। अगर हम पदयात्रा करें तो कितने दिन लगेंगे। अगर हम रेल से यात्रा करें तो कितना समय लगेगा। रेल कहां से जाती है। उन्होंने नक्शे में देखा कि अरे, रेल इटारसी से जाती है। चलो, अगर बड़ौदा जाना हो तो कैसे जाएंगे। रेलवे टाईम–टेबल निकाला और उसे देखना सीखा। आप जानते हैं कि रेलवे टाईम–टेबल देखना आसान नहीं है। उसमें अगल–अलग तालिकाएं होती हैं, जिसमें समय दिया होता है, सब देखना पड़ता है। सब ढूंढ़ना सीखा। जो मौका आ रहा है वह करते जाइये। भूगोल की जानकारी मिलने लगी। रास्ते में कौन–कौन सी नदियां आती हैं, क्या सीधे मैदान में ही जा रहे हैं। नहीं, देखा तो नक्शे में नदियां बनीं हुई थीं। ये कौन–कौन सी नदियां हैं, इनके नाम पता करो। इन नदियों को पार करना पड़ेगा। वहां पुल बना है कि नहीं बना है। तो ये कैसे मालूम चलेगा। नक्शे में पुल दिखाया है कि नहीं। देखा कि कहीं दिखाया गया है और कभी नहीं है। तो क्या करना होगा। ट्रेन जाती है तो पुल तो होगा ही।

एक बड़ा नक्शा लाओ रेलवे वालों से। जिसमें दिखाया होगा कि पुल है कि नहीं। नक्शे में पुल ढूंढे गए, कहां–कहां पर पुल होंगे। रास्ता क्या होना चाहिए जाने का, यह सब तय हुआ। भूगोल का अध्ययन बहुत बढ़िया चला, गणित के साथ रसायन, अर्थशास्त्र का भी अध्ययन चला। जो सबसे बड़ी बात थी और जिसमें उनको बहुत गर्व था कि अब हम एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर के दफ्तर में बिना पूछे जा सकते हैं। फिर तो उन्होंने ये भी तय कर लिया कि एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर साहेब का रुतबा तो बड़ा है लेकिन जानते कुछ नहीं हैं। हम जब सवाल पूछते हैं तो कहते हैं कि पढ़ लो इस वाली चीज में, हर बार यही करते हैं। अब हम उनसे ज्यादा जानने लग गए हैं। अब जाते थे एग्रीकल्चर एक्सटेंशन ऑफिसर साहेब के पास और कहते थे कि साहेब हमें मालूम है कि नाईट्रोजन क्या होता है, आप बता सकते हैं क्या? अब हिम्मत आ गई। एक राजनीतिक हिम्मत पैदा हो गई कि किसी से भी बात कर सकते हैं। अब डर नहीं है। ये शिक्षा का हिस्सा है कि गरीब बच्चों का डर दूर होने लगा है।

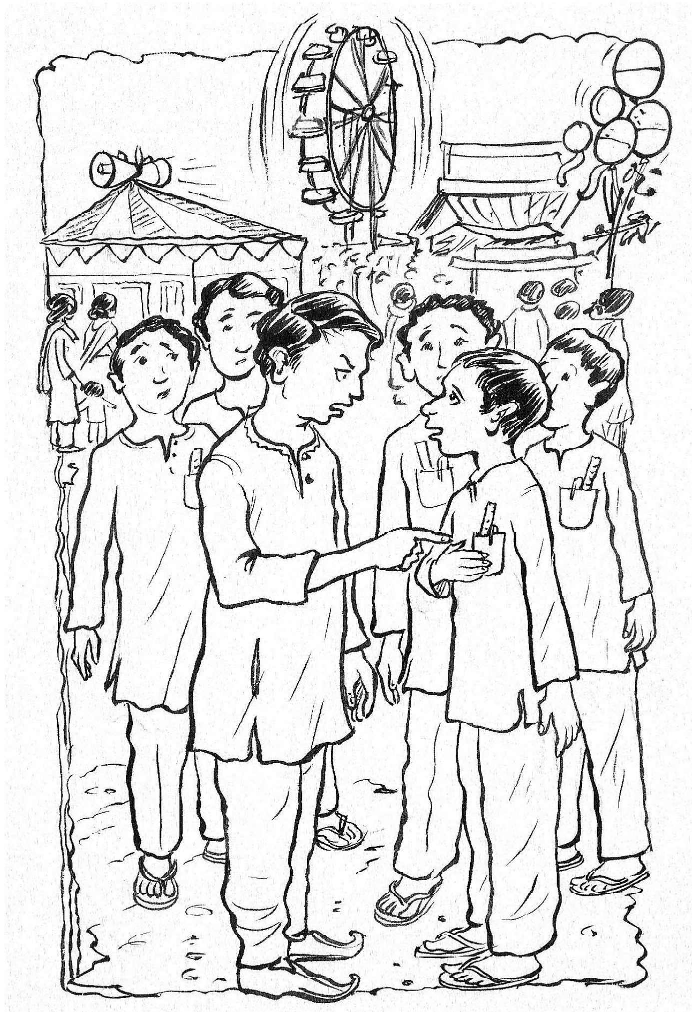
अब और कहानी सुनाने की जरूरत नहीं है। आप अंदाज लगा सकते हैं कि यही प्रक्रिया गाय को पालने में, दूध दुहने में और सुथारी करने में चली। सुथारी करने में तो गजब की सिखाई है। वह इतनी तेज होती है कि लगातार कभी चौकोर कट रहा है तो कभी तिकोना कट रहा है। कभी रंदा लग रहा है, कौन सी लकड़ी है वगैरह। सुथार तो बहुत जानता है। लकड़ी को देखकर बोल देता है कि ये तो सागौन की है, ये तो शीशम की है, ये खराब आम की लकड़ी है इससे काम नहीं चलेगा। कुर्सी में ये लकड़ी लगेगी, तखत में ये लकड़ी लगेगी। सुथार गजब का शिक्षक है, ये सब देख लिया था हमने। उन बच्चों को लगता था कि ये तो निरक्षर

है, इसको क्या मालूम। जबकि वो निरक्षर सुथार कितना जानता है ये उनको नहीं पता था। वह जानता है कि लकड़ी किस–किस जगह से आती है, कौनसी टाल पर मिलेगी, किस जंगल से निकलती है, उसको सब मालूम था। लकड़ी देख कर उसको ये भी मालूम था कि यह जिस पेड़ से काटी गई है उस पेड़ की कितने साल की उम्र होगी। उसको रिंग गिनना आता था। जब मकान बनाना था, तो उसने कहा कि तुम मकान बनाना सीखोगे मुझसे। बच्चों ने कहा कि जरूर सीखेंगे। लकड़ी के मकान की छत बनानी सीखी। बच्चों के साथ हमने भी बहुत सीखा।

एक समूह भावना बनी। आपस में झगड़े होते थे, बहुत बहस होती थी, लड़ाइयां भी होती थीं। कई बार आपस में बातचीत भी बंद कर देते थे। इसने तो कामचोरी की है, रात को सो जाता है, काम ही नहीं करता। सारी सिंचाई तो हम करते हैं वो तो कुछ नहीं करता। फिर मिलकर तय करो कि जो काम नहीं करेगा उसके साथ क्या करना है। वे मिलकर आपस में तय करते थे कि क्या करना है। यहां तक तो गाड़ी बहुत अच्छे से चली और बहुत मजा आया। यह पांच–साढ़े पांच साल का समय था। बहुत कुछ बच्चों ने सीख लिया। एक दिन बच्चों को लगा कि हम पड़ोस के गांव में लगे मेले में जाएंगे। बच्चों ने अपनी जेबों में अपने फाउंटेन पेन लगाए, और उनके पास एक स्केल भी रहता था। कुर्ते की जेब में नोटबुक डाली और बड़े शान से मेला देखने गए। बच्चे जब मेला देख रहे थे तब गांव का ऊंची जाति का एक सामंत जिसका पूरे गांव पर कब्जा था, उसका लड़का आया और उसने बच्चों को देखा कि ये अपनी जेब में फाउंटेन पेन और स्केल रख कर घूम रहे हैं और मेले में मजे कर रहे हैं। वह उनके पास गया और कहा तुम्हारी इतनी हिम्मत कि जेबों में फाउंटेन पेन रख कर चलोगे तुम लोग। ये कह कर उसने उनके फाउंटेन पेन छीने लिए। बच्चे रोते हुए वापस आ गए। बच्चों ने कहा कि उसने हमारे फाउंटेन पेन छीन लिए। हमने कहा कि तुम लोग क्या करते रहे। बच्चों ने कहा कि हम क्या करते, वह बड़ा ताकतवर आदमी है। उसका तो शरीर भी बड़ा है और उसकी ताकत भी बहुत बड़ी है, हम क्या करते। इस पर हमने कहा कि तो ठीक है अगर ताकत के सामने झुक गए तो तुम्हारा फाउंटेन पेन तुमसे छीना जाएगा और हर बार छीना जाएगा। हमारे दिमाग में आया कि हमसे इसलिए छीना क्योंकि अब हम पढ़–लिख रहे



हैं, हममें बोलने की क्षमता आ गई है, ताकत आ गई है। अब हम गरीब लोगों की औकात बढ़ रही है इसलिए सामंत घबरा रहा है। तो अब क्या करना होगा। तय हुआ कि हम सामंत के घर जाकर कहेंगे कि आप अपने बेटे को बाहर भेजो। हम अपने फाउंटेन पेन वापस लेंगे। हम लड़े और अंत में अपने फाउंटेन पेन वापस लेकर आ गए। उस दिन उन्होंने खूब नाच–गाना किया। एक राजनीतिक सत्ता की लड़ाई जीती, समीकरण बदलना सीखा। गाने गाते थे, गाने लिखते थे। खुद गाने बनाते थे। बहुत कुछ सीख लिया उन्होंने। थोड़ी बहुत अंग्रेजी भी सीखने लगे। उनको लगा कि अंग्रेजी भी सीख लें ताकि अंग्रेजी जानने वाला मिलेगा तो अंग्रेजी में बात कर लेंगे उससे। थोड़ी–बहुत अंग्रेजी भी सीखने लगे थे वे। खूब मजा आ रहा था। अभी तक पांच–साढ़े पांच साल की यह कहानी नहीं लिखी गई कि काम से कैसे सीखा जाए और भाषा की उसमें क्या भूमिका होगी। अंत में बच्चे धीरे–धीरे हिंदी भी बढ़िया लिखने लगे, बिना सिखाए हुए।



क्योंकि इतनी किताबें पढ़ते थे कि अपने आप उनको हिंदी भी आने लगी। और बुंदेलखंडी कब हिंदी में बदल गई ये न तो उन्हें मालूम था और न हमें। अपने आप बदलती गई धीरे–धीरे। लेकिन अब बढ़िया लिखने लगे थे वे।

कहानी खत्म होती है। दिवास्वप्न खत्म होता है, बड़े अजीब ढंग से। जो हमने कभी सोचा नहीं था। इन बच्चों में एक विकार आ गया। धीरे–धीरे देखा कि एक विकार आ रहा है। विकार क्या आ गया कि उनमें बहुत अंहकार पैदा हो गया कि इस बाजू के स्कूल जाने वाले बच्चों से तो हम ज्यादा जानते हैं। हाई–स्कूल में जो बच्चे पढ़ते हैं उनसे भी हम ज्यादा जानते हैं। किसानों से ज्यादा जानते हैं, अफसरों से ज्यादा जानते हैं और यहां तक कि अपने मां–बाप से भी ज्यादा जानते हैं। बहुत कोशिश की हमने उन पर नियंत्रण रखने की, उनको समझाने की लेकिन नहीं समझा पाए। क्योंकि वे जानते तो बहुत थे। पर कितनी जल्दी एक छोटे से समूह में ज्ञान अहंकार की ओर ले जाता है ये हमें कल्पना नहीं थी, सोचा भी नहीं था

हमने। फिर धीरे–धीरे इस अहंकार ने वह रूप लिया जो हम कभी भी नहीं चाहते थे। हमने सोचा भी नहीं था कि वे गांव वालों से कट कर, दूर रहने लगे। उनके और गांव वालों के बीच में, उनके और उनके परिवार वालों के बीच में दूरी बढ़ने लगी। हमारे यहां तो एक बड़ा संकट आ गया कि अरे ये क्या हो गया। इसकी तो गांधीजी ने कभी बात नहीं की थी। अंत में उनके मां–बाप को बुलाया गया। मां–बाप ने कहा कि हां, अब तो ये लोग हमसे बहुत कम बात करते हैं। घर आते हैं और खाना खा कर भाग जाते हैं, कहते हैं कि बहुत काम है वहां पर खेती का, सुथार का, गाय पालने का। बहुत काम है हमें, इधर जाना है, उधर जाना है और हम सब लोगों से तो बहुत कम बात होती है। फिर मां–बाप के साथ बैठकर उन बच्चों की कई बैठकें हुईं। अंत में बच्चों ने बहुत धीरे–धीरे ये स्वीकारा कि ये हमारी गलत–फहमी थी, हम मां–बाप से ज्यादा नहीं जानते। हां, हम कुछ जानते हैं जो मां–बाप नहीं जानते लेकिन अंत में तो मां–बाप बहुत जानते हैं। यहां सुलह तो हो गई लेकिन मां–बाप ने कहा कि अब बहुत हो गया ये वाला प्रयोग। अब हमारे बच्चों को कहीं काम पर लगा दीजिए और ये प्रयोग खत्म कीजिए। एक फैसला करके उनको अलग–अलग काम पर लगवाया गया और प्रयोग बंद कर दिया गया।

ये विश्लेषण बहुत लंबे अरसे तक चलता रहा कि ये सब कैसे और क्यों हो गया। इसका अच्छा हिस्सा भी देख लिया और उसका ये वाला अंतिम हिस्सा भी देख लिया। इस दिवास्वप्न से हमने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात सीखी। हमने ये बात सीखी कि जब आप किसी ऐसे क्रांतिकारी शिक्षाशास्त्र का प्रयोग, बाकी सारी व्यवस्थाओं से हट कर अलग से करते हैं, चाहे वो कितना ही अच्छा प्रयोग क्यों ना हो, उसमें ये संभावनाएं हमेशा रहती हैं कि उस समाज की आम प्रक्रियाओं से हट कर होता है। जहां पर बाकी सारी सरकारी स्कूलों में बच्चे जाते थे, उस इलाके के (केवल सरकारी स्कूल ही होते थे, कोई निजी स्कूल ही नहीं था, कोई जानता ही नहीं था कि क्या होता है प्राईवेट स्कूल) तमाम बच्चे तो ऐसे नहीं कर रहे हैं। वे तो अभी भी वैसे ही पढ़ रहे हैं जैसे सब लोग पढ़ते हैं। यहां पर कुछ अद्भुत काम हो रहा है, जिसमें बाकी बच्चे शामिल नहीं है। उन बच्चों के सीखने की गति और क्या सीखते हैं, ये सब इन बच्चों में फर्क था। वहां तो बात करने की छूट नहीं थी, सवाल करने की छूट नहीं थी। वे अपने शिक्षक से कोई बहस नहीं कर सकते थे। यहां तो हमारे सब मास्टर लोग सब हमारे साथ ही काम करते हैं, खेती करते हैं, फावड़ा उठाते हैं। अंत में समझ में आया कि इससे तो हम आम सरकारी स्कूल व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं ला रहे हैं। अलग हट के कोई प्रयोग कर रहे हैं तो उसमें कई प्रकार के अनपेक्षित, बिना सोचे हुए विकारों के आने की संभावनाएं हैं। वह एक व्यवस्था से हट कर काम करने के कारण होता है। लेकिन इस प्रयोग से हम लोगों ने उत्पादक काम के शिक्षाशास्त्र को समझा और सीखा।

अनिल सद्गोपाल : ख्यातनाम शिक्षाविद् हैं, किशोर भारती संस्था के संस्थापक, दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षा संकाय के पूर्व डीन, शैक्षिक चिंतन में आपकी अग्रणी भूमिका रही है और आपने लंबे समय तक जमीनी स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। वर्तमान में अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच के अध्यक्षीय मंडल के सदस्य हैं।